बी.एड.महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों के नैतिक मूल्यों का सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन

प्रिय रंजन

शोधछात्र (शिक्षाशास्त्र)

बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

सारांश : शिक्षा का सार्वभौमिक उद्देश्य है नैतिकता का विकास। प्राचीन व मध्ययुगीन भारत में धर्म, संस्कृति व शिक्षा परस्पर एक–दूसरे के पर्याय रहे हैं। अतः इस सार्वभौमिक उद्देश्य की प्राप्ति होती रही। प्राचीन भारत में शिक्षा द्वारा इस बात पर बल दिया गया कि धर्म का तात्पर्य कर्तव्य या आचरण से है। अतः धर्म प्रधान शिक्षा से व्यक्तियों में सहज त्यागवृत्ति उत्पन्न होती थी, जो नैतिकता का सबल आधार था। प्रत्येक समाज के कुछ नियम तथा आदर्श होते हैं, जिनका पालन करना समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक माना जाता है। ये नियम तथा आदर्श ही नैतिक मूल्य कहलाते हैं। नैतिक मूल्य व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करता है। इनमें से एक महत्वपूर्ण पक्ष है सृजनात्मकता, प्रस्तुत शोध में बी.एड.महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों के नैतिक मूल्यों का सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। क्योंकि छात्राध्यापक राष्ट्र निर्माता है तथा नैतिकता समय काल व परिस्थिति की आदर्श उपज होती है जिसका पालन समाज करता है। शिक्षा समाज की आईना होती है जिसमें प्रत्येक सृजनशील विचार वाले व्यक्ति अपनी स्थिति को ज्ञात कर सकता है तथा उत्कृष्ट राष्ट्र का पोषक बन सकता है।

मुख्य शब्द :– छात्राध्यापक, शिक्षा, नैतिक मूल्य, सृजनात्मकता, राष्ट्रनिर्माण।

प्रस्तावना :–

मनुष्य एक सृजनशील प्राणी है प्रत्येक व्यक्ति अपने क्षमता व विवेक के अनुसार प्राकृतिक संसाधनों से व्यक्ति की आवश्यकता की पूर्ति हेतु वस्तुओं का निर्माण करता है। लेकिन वस्तु समय परिस्थिति व व्यक्ति के विचार के अनुसार अपनी उपादेयता बदल देता है और कभी समाज के लिए हितकारी विध्वंश का कारक भी बन सकता है। यही नैतिकता व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित कर सृजनशीलता को सही दिशा प्रदान करता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है उसका पूरा जीवन समाज में व्यतीत होता है। समाज के अभिन्न अंग होने के कारण उसे समाज के नियमों मूल्यों तथा आदर्शों का अनुकरण करना होता है। प्रत्येक समाज अपने आदर्श व नैतिक मूल्य का निर्माण करता है जो उस समाज के व्यक्तियों को प्रत्येक पल प्रभावित करता है। शिक्षा व्यवस्था में बी.एड.महाविद्यालय एक ऐसी करी है जो राष्ट्र निर्माता के अंदर नैतिक मूल्यों का संचार करता है और नित्य नये–नये अवसर प्रदान कर उनके सृजनशील क्षमता का परीक्षण भी करता है ताकि जब राष्ट्र के भविष्य उनके छत्रछाया में हो तो वे अपने सृजनशील सोच से उन नवीन छात्रों के अंदर नैतिकता के बीज बो दें जिससे आने वाले समय में हुए भारतके स्वास्थ्य नागरिक बन कल्याणकारी राष्ट्र का निर्माण कर सकें। नैतिक मूल्य एवं सृजनात्मकता में एक विशेष संबंध है। नैतिक मूल्य छात्राध्यापकों को किस प्रकार प्रभावित करती है, प्रस्तुत शोध में प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। इसकी झलक हम इतिहास के पन्नों व वर्तमान की चुनौतियों में जीवंत रूप से देख सकते हैं। इतिहास हमें प्रेरणा देता है तो वर्तमान अनुभव और दोनों के योग से सृजनशील सोच का निर्माण करते हैं। सृजनशीलता व्यक्ति के गतिविधि की वह प्रक्रिया है जिसमें नैसर्गिक रूप से नवीन भौतिक तथा आत्मिक मूल्यों का निर्माण किया जाता है। प्रकृति प्रदत भौतिक सामग्री में से तथा वस्तुगत जगत की नियम संगति के संज्ञान के आधार पर समाज की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति

करने वाले नये यथार्थ का निर्माण करने की मानव क्षमता ही सृजनात्मकता है। जिसकी उत्पत्ति गतिविधि की प्रक्रिया में हुई हो, सृजनात्मकता निर्माणशील क्रियाकलाप के स्वरूप से निर्धारित होते हैं। सृजन की प्रक्रिया में कल्पना समेत मनुष्य के समस्त आत्मिक शक्तियों और साथ ही वह दक्षता भाग लेती है जो प्रशिक्षण तथा अभ्यास से हासिल होती है तथा सृजनशील चिंतन को मूर्त रूप देने के लिए आवश्यक होती है सृजनात्मकता की संभावनाएं व्यक्ति व सामाजिक संबंधों पर निर्भर करती है सृजनात्मकता का मौलिक गुण नैसर्गिक चिंतन परिणाम पर पहुँचने की स्वतंत्रता जिज्ञासा स्वायत्तता हास्य आत्मविश्वास को समझने तथा संगठन का निर्माण करने वाले गुण होते हैं।

सृजनात्मकता की प्रकृति :–

1. सर्वव्यापकता
2. नवीनता
3. प्रक्रिया तथा फल
4. परीक्षण द्वारा पोषित
5. अनुपम
6. मौलिकता
7. प्रासन्नता तथा संतोष का स्रोत
8. लोचशीलता
9. प्रतिक्रियाओं की बहुलता
10. विस्तृत क्षेत्र
11. पुनःआख्या
12. सृजनात्मक व्यक्तित्व
13. असामान्य तथा प्रासंगिक चिंतन की अनुरूपता

प्रभावित करने वाले कारण

1. उत्साह पूर्वक वातावरण पैदा करके
2. विविधता की प्रेरणा
3. लचीले तथा सक्रियता को उत्साहित करे।
4. आत्मविश्वास को उत्साहित करना
5. श्रेणी कृतियों के अध्ययन की प्रेरणा
6. स्वयं भी एक रचनात्मक रुचियों वाला व्यक्ति हो

सृजनात्मकता के वर्गीकरण

1. वैज्ञानिक सृजनात्मकता
2. तकनीकी सृजनात्मकता
3. साहित्य सूचनात्मकता
4. शैक्षिक सृजनात्मकता

सृजनात्मकता का सिद्धान्त

1. सृजनात्मकता का प्राचीन सिद्धान्त
2. सृजनात्मकता का जन्मजात सिद्धान्त
3. सृजनात्मकता का वातावरण जन्य सिद्धान्त
4. प्रमस्तिस्क गोलार्द्ध सिद्धान्त
5. स्व–प्रेरणा का सिद्धान्त
6. मनोविश्लेषण सिद्धान्त

सृजनशीलता की विशेषताएं

1. यह वालक आत्म विरोधी होते है।
2. बाहर से हसमुख अन्दर से गुमसुम।
3. अधिक कल्पनाशील होते है या दिवास्वप्न होते है।
4. यह वालक अधिक दृढ़ निश्चयी होते है।
5. यह वालक संवेदनशील होते है।
6. यह वालक अपरम्परावादी होते है।
7. यह वालक साहसी होते है।
8. स्वकेंद्रित होते है।
9. बहुमुखी प्रतिभा के धनी होते है।
10. परिश्रमी होते है।
11. इनमें विचित्र प्रकार के विशेषताएँ पाये जाते है।
12. भविष्य द्रष्टा होते है।
13. दूरदर्शी होते है।

उपर्युक्त आधारों पर यह परिलक्षित होता है कि मनुष्य में सृजनशील कल्पना की महिमा निराली है। सृजन और विध्वंस दोनों की क्षमता रखती है। निर्भर करता है कि उनका उपयोग कैसे करते हैं। सृष्टि की संरचना और उसका विकास सृजनशीलता का ही परिणाम है। नैसर्गिक रूप से स्वभाव तो हमें सदैव कुछ नया करने की प्रेरणा मिलती है। वस्तुतः व्यक्ति में सृजन की शक्ति विचारों और भावों आंतरिक ज्ञान व वोध से ही संभव हुई है। प्रभावशाली ज्ञान व उच्च कोटि की सोच ही त्रुटि रहित विचारों का जन्म देती है जिसके फलस्वरूप नए सृजन होते रहते हैं।

अतः व्यक्ति को स्वयं सोचने की शक्ति में दक्षता प्राप्त करने के लिए मन को यथासाध्य परिपूर्ण तथा विभिन्नता से ओतप्रोत करना आवश्यक है। जिस विषय पर कार्य करना है उस विषय पर सटीक विचार कर प्रमुख ज्ञान प्राप्त करना चाहिए । इससे नए कार्य में अनुकूलता व मौलिकता आती है। उपर्युक्त शब्द ज्ञान और कठिन परिश्रम में सृजन की अतुलित क्षमता होती है। व्यक्ति को जीवन के औचित्य को क्षेत्रों में प्रगति करने के लिए दृढ़ इच्छा कल्पना शक्ति व रचनात्मकता का विकास करना आवश्यक है। ज्ञातव्य है कि बड़े–बड़े लेखक व वैज्ञानिक ने कठिन परिश्रम और सार्थक सोच से अपने कार्य विषय में विश्व कोष की जानकारी संचित की थी। ध्यातव्य है कि सृजनशीलता में हमारी कल्पनाएं भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि कल्पना मन मस्तिक की कलाकार है। वह मनुष्य के भविष्य का चित्र खींचती है यह कलाकार आशावादी होता है तथा विजय सुख सफलता एवं आनंद के चमकदार चित्रांकन करता है। इससे विपरीत कभी यह कलाकारमन अवसादवादी होता है और भय चिंता मृत्यु का उल्लेख करता है। इन चित्रों में अदभूत शक्ति निहित रहती है और वे चित्र ही हमें विश्वास और साहस के शिखर पर पहुंचा सकते हैं या निराशा की गहराइयों में धकेल सकते हैं वास्तव में सकारात्मक सोच ही नित्य नये सृजन का आधार है।

यकीनन जीवन में सृजनात्मकता हमारे प्रत्येक कार्य को प्रभावित कर उसे नया स्वरूप प्रदान करती है। चाहे वह कितना ही सरल व जटिल कार्य क्यों ना हो। मानसिक प्रभाव के लिए वह वैसे ही पथ प्रदर्शक का कार्य करती है जैसे एक दीपक को अपने साथ ले जाता हुआ पथिक समूचे अंधकार में प्रकाश फैला देता है। इसी तरह हमें सुसंस्कारित परिवार और समाज का निर्माण करने के लिए स्वयं

भावी पीढ़ी को सृजनात्मक जीवन शैली में सोचना होगा तभी कल्याणकारी व विकसित राष्ट्र की कल्पना की जा सकती है।

अतएव हम कह सकते हैं कि मनुष्य स्वभाव से संवेदनशील प्राणी है जिसके अंदर मानवीय संवेदना में सृजन का क्षेत्र विस्तृत व अपरिमित है, यह एक ऐसी आवश्यक क्रिया है जो हमारे छोटे से छोटे कार्य को भी विशेष रूप प्रदान करती है। व्यक्ति स्वभावतः अनेक कार्यों में उपयोगी परिवर्तन कर अपनी कल्पनाओं को नया रूप प्रदान करता है जिसके परिणामस्वरूप वह छोटे–छोटे परीक्षण करता है।

वहीं से स्वयं में सृजन की विशेष योग्यता पैदा कर लेता है और परिवार समाज व देश के हित में अनोखा कार्य करके महान ओजस्वी व्यक्ति का स्वामी बनता है।

नैतिकता व्यक्ति का वह अमूल्य सदभाव है जो उसके सदगुणों को प्रदर्शित करता है उचित अनुचित विचार की संकल्पना जो सामाजिक अपेक्षा अनुरूप हो नैतिकता कहा जा सकता है नैतिकता हमें किसी कार्य को करने की या न करने की आज्ञा देती है। नैतिकता में यह भाव भी समाहित है कि निम्न कार्य अनुचित है उसे नहीं करनी चाहिए।

नैतिकता समाज का एक अभिन्न अंग है हमारे द्वारा किए गए किसी भी निर्णय में नैतिकता का आधार होता है। समाज में नैतिकता की भूमिका किसी भी कार्यों के वांछित व अवांछित निर्धारित करने में निहित है।

अतः नैतिकता एक दार्शनिक अवधारणा है जिसमें सही और गलत की अवधारणाओं का व्यवस्थित करना बचाव करना और अनुशंसा करना शामिल है यह जरूरी है कि व्यक्ति के नैतिक व्यवहार को शामिल किया जाए नैतिकता अच्छे और बुरे सही और गलत आदि से भी संबंधित है।

अनुशासन के रूप में नैतिकता उन मूल्यों और दिशा निर्देश का अध्ययन है जिनके द्वारा हम रहते हैं नैतिकता एक नैतिक ढांचा प्रदान करती है जिसमें व्यक्ति कानूनी रूप से अपने अंत का पीछा करने के लिए कार्य कर सकते हैं नैतिकता दर्शन के रूप में नैतिकता नैतिक समस्याओं और नैतिक निर्णय के बारे में दार्शनिक सोच है । नैतिकता एक विज्ञान है यह समस्याओं को तर्क के आधार पर समाधान करती है और व्यक्ति की स्वतंत्रत इच्छा से संबंधित है। नैतिकता एक मानक और विनियामक अनुशासन है अनुशासन नैतिकता के सैद्धांतिक और व्यवहारिक पहलू है सैद्धांतिक रूप से नैतिकता बुनियादी सिद्धांतों को आधार प्रदान करती है व्यवहारिक अनुशासन के रूप में नैतिकता मनुष्य के जीवन से संबंधित है और समाज के अनुरूप अपनी आवश्यकता की पूर्ति का साधन है।

अध्ययन का औचित्य :–

वर्तमान काल में व्यक्तियों में नैतिक मूल्य के प्रति उत्तरदायित्व में कमी आई है जिसके कारण समाज में विभिन्न प्रकार के अनाचार व व्यभिचार फैल गया है। मानवीय संबंध संवेदनहीन हो गए हैं जिससे समाज में नैतिक संकट की स्थिति उत्पन्न होती जा रही है। यदि राष्ट्र निर्माता में भी नैतिक मूल्य का अभाव निरंतर जारी रहा तो समाज में अराजकता और विघटन की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। वर्तमान समय में छात्राध्यापकों के नैतिक मूल्यों का पता लगाना आवश्यक है और यह भी ज्ञात करना आवश्यक है कि नैतिक मूल्य छात्राध्यापकों के सृजनशीलता को किस प्रकार प्रभावित करता है। क्योंकि नवीन चुनौतियों को अनुकूल बनाने के लिए सृजनशीलता में नैतिक मूल्यों का समावेश आवश्यक है जिससे संवेदनशील समाज का निर्माण होगा। वर्तमान मानवीय समाज नैतिक मूल्यों में गिरावट का सामना कर रही है इसके कारण लगातार संघर्ष और टकराव होते हैं। जो मानवीयता के लिए कलंक है। सामान्य टकराव अक्सर खूनी रूप ले लेते हैं व्यक्ति–व्यक्ति के संबंध का आधार संवेदन विहीन हो

गया है। आधुनिकता के दौर में हम प्रद्योगिकी के क्षेत्र में काफी आगे निकल गए हैं और दूसरी ओर मानव समाज की मूल्य प्रणाली में एक उल्लेखनीय गिरावट आई है। सुंदरता और अति भौतिकवाद की पंथ ने विभिन्न व्यक्तियों के बीच सम्बन्धों को बदनाम कर दिया है।

श्रेष्ठ पदशक्ति के साथ महत्वपूर्ण जिम्मेदारी आती है। आज छात्राध्यापकों की क्षमताओं और परिणामों को देखते हुए यह स्पष्ट होता है कि किसी भी गंभीर विषय पर निर्णय लेने में गलतियां लाखों लोगों के जीवन को प्रभावित कर सकती है। छात्राध्यापक स्वस्थ समाज का निर्माण करता है तो साथ में समस्या भी जन्म लेती है जिसे नैतिक मूल्यों के आधार पर निदान किया जा सकता है और सृजन क्षमता से कल्याणकारी राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है। सृजनशीलता वह गुण है जो प्रत्येक व्यक्ति को एक दूसरे से अलग स्थापित होने में मदद करता है। व्यक्ति इसी विशेष गुण की वजह से अपनी आत्मनिष्ठ पहचान का निर्माण करते है। वैश्विक परिवेश पहचान की संकट से गुजर रहा है। प्रत्येक देश और उसकी जनता किसी भी प्रकार से अपनी श्रेष्ठा प्रदान करना चाहता है जिसने मानवीय मूल्य का गौण हो जाता है। ऐसी परिस्थिति में छात्राध्यापकों का दायित्व अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि वे भविष्य निर्माता है और छात्रों के अंदर नैतिक मूल्यों का समावेश कर दिया जाय तो मानवीय संवेदनाओं का अंत नहीं होगा। इसी सोंच को आधार मानकर अध्ययन की प्रासंगिकता शोधार्थी द्वारा निर्धारित किया गया है। जो देश और समाज के लिए महत्वपूर्ण होगा ।

अध्ययन का उद्देश्य :–

1. उत्तम एवं औसत नैतिक मूल्य वाले बी.एड.महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों को सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन।
2. उत्तम एवं निम्न नैतिक मूल्य वाले बी.एड.महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों के सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन।
3. औसत एवं निम्न नैतिक मूल्य वाले बी.एड.महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों के सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पना :–

1. उत्तम एवं औसत नैतिक मूल्य वाले बी.एड.महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों के सृजनात्मकता के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं होता।
2. उत्तम एवं निम्न नैतिक मूल्य वाले बी.एड. महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों की सृजनात्मकता के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं होता।
3. औसत एवं निम्न में नैतिक मूल्य वाले बी.एड. महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों के सृजनात्मकता के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं होता।

जनसंख्या एवं न्यायदर्श :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मुजफ्फरपुर जिले के बी.एड.महाविद्यालय में अध्ययनरत 200 छात्राध्यापकों का चयन यादृक्षिक न्यादर्श विधि के द्वारा किया गया ।

शोध अध्ययन में उपयोग किए गए उपकरण :–

1. वी.के. पासी द्वारा निर्मित सृजनशीलता परीक्षण मापनी
2. अल्पना सेन गुप्ता एवं अरुण कुमार सिंह द्वारा निर्मित : नैतिक मूल्य मापनी

शोध अध्ययन में उपयोग किए गए सांख्यिकीय विधियाँ –

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. मानक त्रुटि विचलन
4. टी परिक्षण

आंकड़ों का सारणीकरण :–

1. **उत्तम एवं औसत नैतिक मूल्य वाले बी.एड.महाविद्यालय के छात्राध्यापकों के सृजनात्मकता का सरणीकरण :–**

सारणी संख्या–01

चर	वर्ग	N	Mean	SD	SED	T test value	significant level		df	Inter pretation
सृजनशीलता	उत्तम	69	94.96	2.92	0.35	22.33	0.05	1.98	138	HO-1 Rejected
	औसत	71	84.24	2.80	0.33		0.01	2.62		

विश्लेषण :–

सारणी संख्या–1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि उत्तम और औसत नैतिक मूल्य वाले छात्राध्यापकों के सृजनात्मकता के आधार पर प्राप्त किए गए मध्यमान क्रमशः 94.96 तथा 84.24 है, वही मानक विचलन क्रमशः 2.92 तथा 2.80 है। मध्यमानों में अंतर की सार्थकता जांचने के लिए t test परीक्षण किया गया। गणना से प्राप्त ज मान 22.33 है df 138 के t सरणी मान 0.05 के सार्थकता स्तर पर 1.98 एवं 0.01 के सार्थकता स्तर पर 2.62 है प्राप्त टी मान सारणी टी मान 0.05 तथा 0.01 के मान से अधिक है ।

अर्थात उत्तम और औसत नैतिक मूल्य वाले छात्राध्यापकों के सृजनात्मकता में सार्थक अंतर पाया गया है ।

2. उत्तम तथा निम्न नैतिक मूल्य वाले बी.एड.महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों के सृजनात्मकता का सारणी करण व विश्लेषण :–

सारणी संख्या–02

चर	वर्ग	N	Mean	SD	SED	T test value	significant level		df	Inter pretation
सृजनशीलता	उत्तम	69	94.96	2.92	0.35	40.40	0.05	1.98	127	HO-2 Rejected
	औसत	60	75	2.77	0.35		0.01	2.62		

सारणी संख्या 2 के आंकड़ों से ज्ञात होता है कि उत्तम और निम्न नैतिक मूल्य वाले छात्राध्यापकों के सृजनात्मकता के आधार पर प्राप्त किए गए मध्यमान क्रमशः 94.96 तथा 75 है वही मानक विचलन क्रमशः 2.92 तथा 2.77 है मध्यमानों में अंतर की सार्थकता जांचने के लिए t-test परीक्षण किया गया। गणना पश्चात प्राप्त t मान 40.40 तथा df 127 के t सारणी मान 0.05 के सार्थकता स्तर पर 1.98 एवं 0. 01 के सार्थकता स्तर पर 2.62 है। गणना पश्चात प्राप्त t मान सारणी t मान 0.05 तथा 0.01 के मान से अधिक है।

अर्थात उत्तम और निम्न नैतिक मूल्य वाले छात्र अध्यापकों के सृजनात्मकता में सार्थक अंतर पाया गया है।

3. औसत तथा निम्न नैतिक मूल्य वाले बी.एड.महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों के सृजनात्मकता का सारणीकरण व विश्लेषण :–

सारणी संख्या–03

चर	वर्ग	N	Mean	SD	SED	T test value	df	Significantlevel		Inter pretation
								0.05	0.01	
सृजनशीलता	औसत	71	84.24	2.80	0.33	19.20	129	1.98	2.62	HO-3Rejected
	निम्न	60	75	2.77	0.35					

सारणी संख्या–3 के आकड़ों से ज्ञात होता है कि औसत एवं निम्न नैतिक मूल्य वाले छात्राध्यापकों के सृजनात्मकता पर प्राप्त किए गए मध्यमान क्रमशः 84.24 तथा 75 है वही मानक विचलन क्रमशः 2.80 तथा 2.77 है। मध्यमानों में अंतर की सार्थकता जांचने के लिए t-test परीक्षण किया गया। गणना पश्चात t मान 19.20 है कि 129 के tसारणी मान 0.05 तथा 0.01 के सार्थकता स्तर पर क्रमशः 1. 98 तथा 2.62 है। गणना पश्चात प्राप्त t का मान सारणी t मान से अधिक है।

अर्थात औसत तथा निम्न नैतिक मूल्य वाले छात्राध्यापकों के सृजनात्मकता में सार्थक अंतर पाया गया है।

सारणी विश्लेषण

1. सारणी संख्या एक के आंकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि वास्तविक सारणी t मान तथा प्राप्त t मान में काफी अंतर है। जिसके आधार पर हम कह सकते हैं कि उत्तम और औसत नैतिक मूल्य वाले बी.एड. महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों के सृजनात्मकता में सार्थक अंतर है।
2. सारणी संख्या 2 के आंकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि वास्तविक सारणी t मान तथा प्राप्त t मान में अंतर है। जिसके आधार पर कह सकते हैं कि उत्तम और निम्न नैतिक मूल्य वाले बी. एड. महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों के सृजनात्मकता में सार्थक अंतर है।
3. सारणी संख्या तीन के आंकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि वास्तविक सारणी t मान तथा प्राप्त t मान में अंतर है। जिसके आधार पर कह सकते हैं कि औसत और निम्न नैतिक मूल्य वाले बी.एड. महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों के सृजनात्मकता में सार्थक अंतर है।

निष्कर्ष :–

छात्राध्यापक हमारे समाज के निर्माता होते हैं अध्ययन काल में अच्छे गुणों का विकास कर उन्हें आदर्श जीवन की ओर अग्रसर किया जा सकता है तथा स्वस्थ समाज का निर्माण किया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध के परिणाम से यह स्पष्ट है कि छात्राध्यापकों के नैतिक मूल्य का सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। अतः आवश्यक है कि समाज, परिवेश तथा महाविद्यालयों द्वारा छात्राध्यापकों में नैतिक मूल्य का विकास इस प्रकार किया जाए कि वे शिक्षक के रूप में जिस विद्यालय, समाज व परिवार का सदस्य बने वहां अपना प्रकाश इस प्रकार प्रकाशित करें कि कुछ समाज व परिवार के सभी बुराई रूपी अंधकार समाप्त हो जाए तथा समाज व विद्यालय में एक उत्तम व आदर्श नैतिक मूल्य का निर्माण हो जिससे नई पीढ़ियों के चुनौतियों व सामाजिक बुराइयों को समाप्त किया जा सके व एक स्वस्थ्य एवं कल्याणकारी राष्ट्र का निर्माण हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

[1] जसराज कुंवर 2001 – ए.स्टडी ऑफ एडजस्टमेंट एमंग कॉलेज स्टूडेंट, साइको लिंगुआ ISSN-03TH3132 वाल्यूम–2

[2] पाण्डेय आर.एस. 2003–शिक्षा मनोविज्ञान आर. लाल बुक डिपो, मेरठ। पेज संख्या–340

[3] डॉक्टर शर्मा तृष्णा 2008–किशोरों में समायोजन क्षमता शोध प्रकल्प अंक 43, पृष्ठ संख्या 31, 33

[4] नायक पी.के. एवं दुबे पी. 2016 – रिसर्च मेथेडोलौजी – ए.पी. एच. पब्लिशिंग कॉरपोरेशन, नई दिल्ली।

[5] नायक पी.के. 2018 – शिक्षा मनोविज्ञान शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद ।